Shakabpa's original passport recovered

The original passport issued by the government of independent Tibet in Oct 1947 to the head of the country's finance department, Tsepon Wangchuk Dedhen Shakabpa, has been recovered and handed over to the Office of His Holiness the Dalai Lama on Mar 29, said the Friends of Tibet (INDIA) General Secretary, Mr. Tenzin Tsundue. The handover was made to the Dalai Lama's private Secretary, Mr. Tenzin Geyche, by Tsundue and Rev. Pema Dorjee, former Head of Sarah Institute of Buddhist Dialectics, near Dharamsala).

Shakabpa used the passport while heading a Tibetan government trade mission in 1948 to India, the United Kingdom, the United states and several other countries. The passport, made on a large sheet of traditional hand-made Tibetan paper, bears visa and transit permit seals and stamps issued by more than seven countries. The passport is dated "26th day of the 8th month of Fire Pig Year (Tibetan)," corresponding to Oct 7, 1947.

The historic document had fallen into the hands of antique dealers after Shakabpa passed away at his home in Kalimpong, India, in 1989.

Friends of Tibet (INDIA) bought the document, along with other related paper, from an antique dealer in Kathmandu for a princely sum of money at the end of a long negotiation over price. The transaction was carried out by Mr. Kongpo Dhondup, the newly elected Settlement Officer of Boudha-Jorpatan Tibetan Refugee Camp, Nepal.

Friends of Tibet (INDIA) stumbled upon the historic document in the course of scouring for materials for their Tibet exhibition called "STORY OF A NATION: Independent, Occupied and Exiled Tibet". Said Mr. Tsundue: "In our efforts to gather the incredible story of this nation, we have been able to bring together some amazing old photographs and objects of historical importance belonging to Independent Tibet. So far, we have been able to collect more than 60 photographs and objects. The traveling exhibition will start its journey from May 2004 from Cochin, South India."

Shakabpa's surviving family members welcomed the recovery of the lost historic document. In a statement Apr 4, they said that after the late Tsepon WD Shakabpa passed away on Feb 23, 1989, his "valuable documents, scriptures and artifacts were improperly sold to private dealers and individuals without the knowledge, consent, or authorization of the elder principals of our family." □

दिव्य हिमाचल
धर्मशाला, शुक्रवार, 2 अप्रैल, 2004

पहला तिब्बती पासपोर्ट नेपाल में

अनल पत्रवाल ✦ धर्मशाला

तिब्बतियों का एक ऐतिहासिक दस्तावेज (पासपोर्ट) करीब 12 वर्षों के बाद नेपाल से बरामद कर लिया गया है। यह ऐतिहासिक दस्तावेज एक पासपोर्ट है, जो आजाद तिब्बत के वक्त वर्ष 1948 में तिब्बती सरकार के तत्कालीन सचिव तेपसन शक्बप्पा को जारी किया गया था।

शक्बप्पा ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्हें तिब्बत मे पहली बार पासपोर्ट जारी हुआ था। इसलिए ही इसे एक ऐतिहासिक दस्तावेज माना जा रहा है। यह पासपोर्ट पश्चिम बंगाल में वर्ष 1992 में गुम हुआ था, तो वर्ष 2004 में नेपाल में एक 'एंटीक पीस' की दुकान में मिला। हालांकि शक्बप्पा अब नहीं हैं, पर इस ऐतिहासिक दस्तावेज को नेपाल से लाकर महामहिम दलाईलामा के सुपुर्द कर दिया गया है। इस पासपोर्ट की महत्ता तिब्बतियों के लिए इसलिए ज्यादा है, क्योंकि तिब्बती मानते हैं कि यही बात दर्शाती है कि तिब्बत एक आजाद देश था, क्योंकि शक्बप्पा इस पासपोर्ट को लेकर भारत, ब्रिटेन,

1992 में पं. बंगाल में गुम हुआ था पासपोर्ट

अमरीका, इटली, स्विस, फ्रांस की यात्रा पर गए थे, जिससे पता लगता है कि वर्ष 1949 से पहले तिब्बत को एक आजाद देश के तौर पर मान्यता थी। गौर हो की जब यह पासपोर्ट जारी किया गया था, उस समय शक्बप्पा तिब्बत सरकार के वित्त विभाग के प्रमुख थे। वह एक अच्छे लेखक माने जाते थे। उन्होंने 'तिब्बत एक पोलिटिकल हिस्ट्री' नामक किताब भी लिखी थी। वह तिब्बत पर चीनी कब्जे के बाद यहीं पर आ गए थे तथा वर्षों तक यहीं रहे। 1992 में उनका यह पासपोर्ट पश्चिम बंगाल में कहीं गुम हो गया था। उसके बाद पासपोर्ट की काफी तलाश की गई, पर नहीं मिला। प्राप्त जानकारी के अनुसार कांगपो डोंडुप नामक व्यक्ति इस पासपोर्ट को लेकर नेपाल से 28 मार्च को यहां पहुंच गए व 29 मार्च को इसे महामहिम दलाईलामा के निजी सचिव के सुपुर्द कर दिया गया है, जिसे कि अब महामहिम तक पहुंचा दिया गया है।

▸ शेष पृष्ठ 9 पर

पहला तिब्बती पासपोर्ट...

बताया जाता है कि यह पासपोर्ट पारंपरिक तिब्बती तरीके से बना हुआ है। इसका बाहरी हिस्सा हाथ से बनाया गया है। पुराना दिखने वाले इस पासपोर्ट के चारों तरफ चांदी लगी हुई हैं। इस पर कई देशों की मोहरें लगी हुई हैं। पासपोर्टधारक की फ़ोटो श्वेत-श्याम है।